श्री राम चन्द्र मिशन®

India ECHOES
ONE WORLD ONE HUMANITY

मालिक की रिपोर्ट

शनिवार, १८ फरवरी को, सुबह लगभग १०:३० बजे मालिक गायत्री से आश्रम आए। सत्संग का समापन हुआ ही था और अभ्यासी उनके स्वागत में कतारबद्ध हो गये।

मालिक ने अपने कार्यालय से ही सी.सी.टी.वी. पर आई.टी. कार्यशाला की कार्यवाही देखी। उन्होंने भाई कमलेश पटेल और भाई पी.आर. कृष्णा द्वारा दी गयी वार्ताएं बहुत ध्यान से सुनी। उन्होंने सभी वार्ताओं को, और पूछे गये प्रश्नों को ध्यान से सुना। रात्रिभोज के बाद मालिक को बताया गया कि अगले दिन सत्संग के बाद कुछ नई डीवीडी का विमोचन किया जाना है। मालिक ने जवाब दिया, "कृपया ए.वी. के विमोचन के लिये किसी और को ढूंढ लें। अब से, मैं सिर्फ़ प्राणाहुति देने आऊंगा। मैं टेलीग्राफ के खंबे जैसा हूँ, जो सिर्फ़ प्रसारण के काम आता है। रविवार, १९ फरवरी को, मालिक ने सुबह का सत्संग करवाया और कुछ आडिओ वीडिओ का विमोचन प्रकाशन टीम द्वारा किया गया।

उत्तरी अमरीका की संगोष्ठी

सोमवार, २० फरवरी को, अमरीका की संगोष्ठी की शुरुआत हुई। अपनी अस्वस्थता के बावजूद मालिक ने सुबह का सत्संग करवाया। शाम को यू.एस.ए के नए अभ्यासियों का एक समूह कक्ष में एकत्रित हुआ। मालिक उनसे मिलकर अति प्रसन्न हुए और एक प्रेरक वार्ता दी जिसने सभी के दिलों को छू लिया। अमरीका की संगोष्ठी के दौरान मालिक हर सुबह तीन प्रशिक्षक तैयार कर रहे थे। यह उनके लिये थका देने वाला था। वे थके हुए और अस्वस्थ होने के बावजूद अनवरत कार्यरत थे।

मंगलवार, २१ फरवरी को, मालिक ध्यान कक्ष में हुई ए.जी.एम मीटिंग में उपस्थित हुए और एक सशक्त वार्ता दी जिसका शीर्षक था, "अपना पूरा दिल दीजिए"। वार्ता की कुछ झलकियां:

* सहज मार्ग में हम अपने प्रयासों से आंके जाते हैं न कि हम क्या प्राप्त करने में सफल हुए हैं।

* प्रेम देने में कोई मूल्य नहीं लगता। परन्तु यही ऐसी चीज है जो हम रोक लेते हैं।

* ईश्वर ने हमें मजे के लिये कुछ नहीं दिया है। पांचो इन्द्रियों में से कोई भी मजे के लिये उपयोग नहीं करनी चाहिये। पांचो इन्द्रियां हमारे जीवन में हमारे मार्गदर्शन के लिये हैं।

* आध्यात्मिकता आपके दिल को ना टूटने देने में आपकी मदद करती है।

बुधवार, २२ फरवरी को, मालिक को ख़बर मिली कि बहन कस्तूरी का निधन हो गया है। वैसे भी वे बहुत उदास थे क्योंकि हैदराबाद आश्रम में एक युवा अभ्यासी की गिर जाने से मौत हो गई थी।

संगोष्ठी सप्ताह के दौरान एक दिन, सोने जाने के पहले, मालिक ने कहा "ऐसा लगता है कि यह मेरे लिये 'शिवरात्रि' जैसी होगी, मतलब कि वो पर्याप्त नींद नहीं ले पायेंगे। अगले दिन, मालिक के डॉक्टर ने कहा कि वे पूरी रात नहीं सोये हैं। हमेशा की तरह, मालिक से मिलने के इच्छुक अभ्यासियों का सतत प्रवाह बना रहा और वे सभी से मिल पाने का यथासंभव प्रयत्न कर रहे थे।

गुरुवार १ मार्च को जब वे नाश्ते के बाद बोल रहे थे, उन्होंने आर्थर कोएस्टलर की कुछ किताबों का जिक्र किया और उनकी सिफारिश करते हुए कहा:

* आप चीज़ों को उसी प्रकार देखते हैं जैसे आप प्रशिक्षित हैं। विचार के पार जाने के लिये आपका चीज़ों को जानना जरूरी है–

विज्ञान, कला वगैरह। आपका सब कुछ जानना जरूरी नहीं है लेकिन उनकी जगह की पहचान जरुरी है।

* त्रासदियां मनुष्य के अंदर से सर्वश्रेष्ठ को प्रकट होने में मदद करती हैं क्योंकि कष्ट ऐसा करवाते हैं। कॉमेडी इसका विपरीत करती है– निकृष्टतम उभारती है।

* कुछ भी इतना बुरा नहीं होता कि उसमें कुछ भी अच्छा नहीं हो। और इसका विपरीत भी उतना ही सही है। अगर एक वहां है तो दूसरा वहां होगा ही।

शनिवार, ३ मार्च को, मालिक बोस्टन के एक युवा लड़के को प्रशिक्षक के लिये तैयार कर रहे थे। मालिक ने उससे कहा "इससे पहले कि मैं तुम्हें प्रशिक्षक बनाऊं, मैं तुम्हें चेतावनी देना चाहता हूं। अपने उत्साह में, बिना विवेक के प्रत्येक को सहज मार्ग में मत लाना। मान लो यहां एक नशा करने वाला है, तुम नहीं कह सकते, मुझे सिटिंग देकर उसकी मदद करने दो। दयालु होना तुम्हारे लिये नहीं है; (बाबूजी महाराज की तस्वीर की तरफ़ इशारा करते हुए) यह उनके लिये है।"

ईरान की संगोष्ठी

सोमवार, ५ मार्च को, ईरानी संगोष्ठी शुरु हुई और ६ तारीख को, मालिक ने डोर्म 'ए' में सत्संग करवाया। सिटिंग के बाद मालिक ने कहा कि वे वार्ता देने में असमर्थ हैं क्योंकि वे स्वस्थ महसूस नहीं कर रहे थे। तब, कुछ ईरानी अभ्यासियों ने मालिक को उपहार देना शुरू कर दिया, वे भावुक नज़र आने लगे। कोई भी तुरन्त सोच सकता था कि मालिक अपनी योजना बदल देंगे और वार्ता देंगे। कईयों कि आंखे भर आयीं। यहां तक कि मालिक का भी गला रुन्ध गया,और कुछ विशेष प्रवाहित होने लगा। मालिक ने कहा,"मैं वार्ता नहीं देने वाला था क्योंकि मैं अच्छा महसूस नहीं कर रहा था, लेकिन आपके प्रबल प्रेम ने मुझे बोलने के लिये मज़बूर कर दिया"। कमरे में उपस्थित करीब सभी रो रहे थे। मालिक ने कहा, "जब कोई इस प्रकार रोता है, यह उसके दिल में नरमी आने का संकेत होता है। और, इस अवस्था में, दूसरों के लिये यह उचित नहीं है कि वे वहां जायें और सांत्वना देकर रोना बंद करने को कहें, आदि।" मालिक ने बताया, पूरी सहज मार्ग की साधना का परिणाम ह्रदय का नरम हो जाना होना चाहिये। शुरुवाती सालों में, उनके आंसू आते हैं। लेकिन आंसू नहीं आने पर भी दिल की नरमी बरकरार रहनी चाहिये; दिल का नरम होना कभी भी रुकना नहीं चाहिये। इस सत्र के बाद, मालिक गायत्री चले गये। शुक्रवार, ९ मार्च को, उन्होंने सभी ईरानी अभ्यासियों को गायत्री में रात्रि भोज के लिये आमन्त्रित किया।

शनिवार, १० मार्च को, सुबह लगभग ८:४५ पर मालिक आश्रम आये। डोर्म 'ए' में इरानियों के सत्संग के बाद, मालिक ने कहा, "मूलतः मेरी सिर्फ़ वार्ता देने कि योजना थी, लेकिन यहां ये ईरानी महिला ध्यान शुरू करना चाहती थी, और इसलिये मैनें सभी को सिटिंग दे दी। आप देखते हैं, कैसे हम योजना बनाते हैं और वह बदल जाती है। हमें बहुत ज़्यादा योजनाएं नहीं बनानी चाहिये जैसे कि पश्चिमि लोग बनाते हैं बल्कि बहाव के अनुरूप जाने को तैयार रहना चाहिये।" उसके बाद उन्होंने बात की नदी के बारे में, कि कैसे वह बहते हुए अपना रास्ता बनाती जाती है। हमारा जीवन भी इसी तरह होना चाहिये। हमें शिखर से प्रारम्भ करना चाहिये, प्रेम और विश्वास आदि के उच्चतम आदर्शों से। और फिर इसे निचले स्तर तक बहने देना चाहिये, कि सब तक पहुंचे, आदर्शों से समझौता किये बगैर।

शाम को, मालिक ने केरल के ज़ोनल आश्रम के बारे में वीडिओ देखा और कहा कि, आश्रम का शुभारम्भ हो गया है अब अभ्यासी इसका उपयोग कर सकते हैं।

मुक्ति पर

रविवार, ११ मार्च को, सुबह के सत्संग के बाद, अपने शयन कक्ष में बात करते हुए, मालिक ने कहा कि किस तरह बच्चों का हर अनुभव नया और आश्चर्य से परिपूर्ण होता है। "कई वर्ष गँवाने के बाद मैं स्वयं होना सीख रहा हूं"। उन्होंने कहा, "नहीं, मैं मज़ाक नहीं कर रहा। आध्यात्मिकता ने मुझे खुद को पहचानना सिखाया, आध्यात्मिकता ने सिखाया कि जब तक मैं स्वयं न रहूं, मैं प्रगति नहीं कर सकता"। फिर विषय मुक्ति की ओर बदल गया और मालिक ने बताया कि कैसे उन्होंने अपने आप को अभ्यासियों से मुक्त किया, मिशन से मुक्त किया तथा अपने उत्तराधिकारी से भी मुक्त किया। उन्होंने कहा, "मैं सोचता था कि अभ्यासियों के प्रति मैं जिम्मेदार हूं। इसलिये अलंकारिक रूप से बोलें तो, 'मैं अपने आप को मारता था' अभ्यासियों के लिये। परन्तु एक समय मैंने सोचा कि मेरी ज़िम्मेदारी मेरे मालिक के प्रति है ताकि मैं अपने मलिक को बता सकूं कि मैं अपने काम से क्या बनता हूँ, बजाए इसके कि मैं क्या बनाता हूँ और यह मुझे अभ्यासियों से मुक्त करता है। तब मेरे उत्तराधिकारी की समस्या आई, आप जानते है, मैं परेशान था, कि मेरे बाद क्या होगा? एक दिन, मैंने कहा, कि मैंने बहुत कर दिया। मैंने सौंप दिया है, अब 'उसे' जिम्मेदारी लेनी है और वह 'उसकी' समस्या है और मैं उससे मुक्त हो गया"।

शनिवार, १७ मार्च को, नाश्ते के बाद, मालिक डोर्म 'ए' में चित्तूर से आये हुए ५०० अभ्यासियों से मिलने गये। रविवार, १८ मार्च को, मालिक ने सत्संग करवाया तथा फिर विल्लूपुरम से आये हुए अभ्यासियों के समूह से मिले। उन लोगों ने सात एकड़ ज़मीन खरीदने का प्रस्ताव दिया, जिसमें कुछ हिस्सा आश्रम के लिये हो और बचा हुआ अभ्यासियों की कॉलोनी के लिये। मालिक ने "स्टार वार्स" नामक फ़िल्म देखी और कहा कि उन्हें उनमें से योडा का एक संवाद पसन्द आया, "डर अन्धकार की ओर ले जाता है क्योंकि डर से गुस्सा, गुस्से से नफ़रत, और नफ़रत से दुख आता है, जो फ़िर अन्धकार की ओर ले जाता है"। शाम को, गुजरात से आये हुये अभ्यासियों का समूह कॉटेज में आया। मालिक ने अपना श्वास–व्यायाम छोड़कर उन्हें सिटिंग दी। वे धैर्यपूर्वक सभी से मिले तथा उनकी बातों के जवाब दिये।

बुधवार, २१ मार्च को, गुरुदेव ने योजना बनायी कि आम के एक पेड़ को आम उपवन के एक भाग से दूसरे भाग में बदलना है। उन्होंने खुद सुनिश्चित किया कि सारे एहतियात बरते जायें ताकि पेड़ को कुछ हानी ना हो। २५ मार्च को, गुरुदेव ओमेगा विद्यालय के बारवी कक्षा के करीब १०० छात्रों से मिले। उन्होंने उनके साथ बात–चीत की, उनके साथ नाश्ता किया और समूह चित्र भी लिया। अगले दिन गुरुदेव गायत्री गये और एक हफ़्ता रुककर, शनिवार को आश्रम वापस लौटे।

"हर सत्संग एक व्यक्तिगत सिटिंग कि तरह होना चाहिए"

रविवार, १ अप्रैल को, गुरुदेव ने एक गहरी सिटिंग दी। उन्होंने कक्ष छोड़ा, गोल्फ़ गाड़ी में बैठे, एक लंबी डोरी वाले माइक्रफ़ोन के लिए बुलवाया, और फ़िर "समूह सत्संग देने की कला" पर एक छोटा सम्भाषण दिया। गुरुदेव ने कहा, कि जब वे सिटिंग दे रहे थे, उन्होंने सोचा कि प्रशिक्षकों को सीखना चाहिए कि कैसे हर अभ्यासी को सत्संग में व्यक्तिगत सिटिंग कि तरह महसूस कराए। उन्होंने कहा कि भाई कमलेश पटेल को यह करना चाहिए और अब से वे रविवार का सत्संग संचालित करेंगे। आगे बताते हुए गुरुदेव ने कहा, "निसंदेह, मै यहाँ हूँ। मैं कभी–कभार सिटिंग देने के लिए भी यहाँ आऊँगा। पर शायद वह रविवार ना हो, हफ़्ते में कभी भी हो सकता है। तो तैयार रहो"। उन्होंने इसे सादी तमिल भाषा में भी दुहराया और फ़िर निकल पड़े। एक अनौपचारिक चर्चा में, एक बहन ने उल्लेख किया कि कैसे ध्यान करते हुए एक इंसान की अंदरूनी खूबसूरती प्रकट होती है। गुरुदेव ने स्पष्ट करते हुए कहा कि ऐसा नहीं है कि ध्यान करने से एक इंसान और खुबसूरत हो जाता हो । पर उनकी आंतरिक दिव्यता प्रकट होती है और खिलती है । इतना प्रत्यक्ष बदलाव उन्होंने देखा था जब एक इंसान तुरन्त एक सिटिंग के पश्चात् बिलकुल अलग दिखने लग गया ।

"स्मरण गुरुदेव को आकर्षित करता है"

सोमवार, २ अप्रैल को, हफ़्ते–भर की संगोष्ठी, कानपुर से आए करीब ६५० अभ्यासियों के लिए शुरू हुई और गुरुदेव ने "ए" डोर्म में जाकर सत्संग कराया। कुछ इरानी अभ्यासियों से गुरुदेव कि भेंट हुई। एक अभ्यासी ने पूछा, "जब हम वापिस जाएंगे, तो गुरुदेव का ध्यान हमारी ओर कैसे आकर्षित रखेंगे?" गुरुदेव ने जवाब दिया,

"गुलाब कैसे आकर्षित करता है? – अपनी खुबसूरती और खुशबू से, बच्चा अपनी माँ को कैसे आकर्षित करता है – अपने प्यार से; अभ्यासी कैसे गुरुदेव को आकर्षित करता है – अपनी आध्यात्मिक स्थिति से"। गुरुदेव ने कहा, "हमारी आध्यात्मिक स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि वह गुरुदेव को अपने साथ रखें। और उसे करने का तरीका है कि ध्यान ठीक से करें और निरन्तर स्मरण का अभ्यास करें, यह जानते हुए कि स्मरण ध्यान से श्रेष्ठ है"। अभ्यासी ने फ़िर पूछा, "निरन्तर स्मरण से आगे का स्तर क्या है?" और गुरुदेव ने प्रत्युत्तर दिया, "जब आप उस स्तर तक आयेंगे, मैं आपको बताऊँगा"। दूसरे मौके पर, एक अभ्यासी बहन ने कहा कि वह पेशे से गायिका हैं पर उसे लगा कि आजकल गुरुदेव ने उसके हृदय को अधिकार में ले लिया है और वह अपने दिल को गाने में लगा नहीं पा रही है। उसने पूछा कि क्या उसे अपना पेशा बदलना चाहिए। गुरुदेव ने कहा, "वह ज़रूरी नहीं है। बदले में, यह सोचो कि गुरुदेव ही बाँसुरी आपके अंदर से बजा रहें है और फ़िर अपना संगीत वाद्य बजाएं।"

शुक्रवार, ६ अप्रैल को, भाई कृष्णा ने एक सम्भाषण दिया और गुरुदेव ने अपने कुटीर से, सी.सी.टी.वी. द्वारा सुना। सम्भाषण के बाद, गुरुदेव ने तय किया कि डोर्म 'ए' में जाकर सिटिंग दें। तत्पश्चात् उन्होंने केंद्र–प्रभारी को संकेत किया कि उनका कार्य समाप्त नहीं हुआ है और अगले दिन वे एक और सिटिंग देना चाहेंगे। ७ अप्रैल को, गुरुदेव ने हिंदी में भाषण दिया और एक सिटिंग भी दी। उन्होंने कहा कि अगर वह कानपुर गए होते, तो अभ्यासियों को सिर्फ़ एक या दो दिन के लिए मिल पाते, पर अब जब वे लोग यहाँ पर आए हैं, वह उनसे पूरे हफ़्ते मिल पाए । बहुत अभ्यासियों को उस एक हफ़्ते में पूर्ण परिवर्तन महसूस हुआ और उन्हें बदलाव दिखा, पहले से लेकर आखरी सिटिंग तक।

रविवार, ८ अप्रैल को, गुरुदेव की घोषणा के बाद, पहली बार भाई कमलेश ने रविवार के सत्संग का संचालन किया । शाम को, गुरुदेव ने कुछ पधारे हुए अभ्यासियों के साथ उत्साहपूर्ण चर्चा की और फ़िर उन्होंने तय किया कि सब के लिए एक सिटिंग देंगे, जिसमें १७–१८ साल के कुछ ५–६ युवक अभ्यासी भी शामिल थे जो सहज मार्ग अभ्यास शुरू करना चाहते थे। उन्होंने जब गुरुदेव से अनुमति मांगी, गुरुदेव ने सिटिंग में शामिल होने की मंज़ूरी दे दी।

गुरुदेव के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना

आजकल, हम देख सकते हैं कि गुरुदेव कितनी दिलचस्पी ले रहें हैं, कि उनकी गैर हाज़री में कैसे अभ्यासियों को उनकी आध्यात्मिक उपस्थिति महसूस कराएं और अभ्यासियों के प्रत्यक्ष मिलने की चेष्टा और खुद की तबीयत के बीच में संतुलन भी रखा जाए। नियुक्त किए गए स्वयं–सेवक अच्छा कार्य कर रहें हैं – हर एक अभ्यासी या झुंड की शुभकामनाओं को गुरुदेव तक पहुँचाने में और उनके साथ नियुक्त भेंट भी कराने में। जहाँ पर सचमुच कि ज़रूरत है, यह भेंट हो जाती है और बाकी सब मामलों में गुरुदेव चाहेंगे कि अभ्यासी उनके मन और तबीयत पर ज़ोर ना डाले। उनके प्रति हमारा प्यार, हमें इज़ाज़त नहीं देता है कि हम अपने प्रिय को

गुरुदेव ने" व्हिस्पर्स फ्रॉम दि ब्राइटर वर्ल्ड" के चौथे भाग का विमोचन किया। "व्हिस्पर्स" शीर्षक की नयी एम पी ३ सी डी में से कुछ संदेशों को चलाया गया। इस सी डी में कुछ चुने हुये संदेशों को किताबों में से पढ़कर सम्मिलित किया गया है।

हमने एक चित्रावली भी प्रस्तुत की है जिसमें आपको विभिन्न केन्द्रों पर हुये कार्यक्रमों की झलक मिलेगी।

पूज्य बाबूजी महाराज का जन्मदिवस समारोह

पूज्य बाबूजी महाराज का जन्मदिवस देश के सभी केन्द्रों में श्रद्धा, उत्साह, खुशी और भक्ति के साथ मनाया गया। गुरुदेव के निर्देशानुसार सभी आश्रमों और केन्द्रों में समारोह आयोजित किये गये। इस शुभ अवसर में भाग लेने के लिये एकत्रित अभ्यासी खुशी, उमंग और उत्सुकता से भरे हुये थे। अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया और बहुत सारे अभ्यासियों ने इन कार्यक्रमों की योजना और आयोजन में बहुत परिश्रम भी किया जिससे कि उत्सव सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न हो सके।

चेन्नई में गुरुदेव ने सत्संग कराया और इस अवसर के बारे में वार्ता दी। उन्होंने ऐसे अवसरों की आवश्यकता के बारे में बताया जिन्हें हम महान विभूतियों को स्मरण करने के लिये मनाते हैं। उन्होंने कहा कि स्मरण से हमें अतीत में नहीं जाना चाहिये बल्कि हमें उन्हें ऐसे स्मरण करना चाहिए जैसे कि वे वर्तमान में हैं और हमारे साथ आज भी उपस्थित हैं। बाबूजी का उदाहरण देते हुये उन्होंने कहा कि हमें उनका जीवन, उनका जीवन जीने का ढंग और उनकी सादगी को भी याद करना चाहिये।

भीलवारा

अलुवा

अजमेर

अलीगढ़

जोधपुर

एकोज़ इंडिया समाचार – पत्र

देहरादून

दावणगेरे

श्री गंगानगार

बीकानेर

मदुरई

बंगलुरु

कांशीपुर

रामपुर

सिद्धिपेट

राँची

मिरजापुर

गोरखपुर

उदयपुर

कानपुर

वाराणसी

पयन्नूर

नोयडा

भाईचारे के सशक्तिकरण की यात्रा

वाराणसी, उत्तर प्रदेश

वाराणसी उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में है जो कि विंध्य पर्वत श्रेणी में स्थित है। २३ मार्च को वाराणसी केंद्र के ३० अभ्यासी, आपसी प्रेम और भाईचारे की भावना को मजबूत करने के मालिक के संदेश को लेकर, बस द्वारा उप केंद्रों में गए। समूह का अभिनंदन और अगवानी प्रशिक्षक भाई रवि जैन और भाई आर. के. मालवीय द्वारा की गई। उन्होंने जिन केंद्रों का भ्रमण किया उनमें अदल्हाट, रोबर्टगंज, रेणुकूट, शक्तिनगर और दूधी हैं। उनका अभिनंदन नजदीकी केंद्रों के स्थानीय अभ्यासियों द्वारा किया गया। स्थानीय जनों को एकत्र करने का कार्य अदल्हाट तथा रिहंड नगर में किया और सत्संग का आयोजन रोबर्टगंज, शक्ती नगर तथा दूधी में किया गया। पूरे दो दिन के भ्रमण के दौरान प्रत्येक अभ्यासी ने ऐसा महसूस किया कि मानो मालिक स्वयं उनके साथ यात्रा कर रहे हों। उनका प्रेम और स्नेह अभ्यासियों के दिलों में तीव्रता से स्पन्दित होता रहा। विभिन्न केंद्रों में अभ्यासियों के द्वारा उनका बहुत अधिक और अविस्मरणीय प्रेम और लगाव दिखाई दे रहा था।

युवाओं के लिये कार्यक्रम

अहमदाबाद, गुजरात

२५–२६ फरवरी को अहमदाबाद आश्रम में 'युवावस्था–प्रतिज्ञा और प्रयास का समय' संबंधी विषय था। प्रतिभागियों को छोटे–छोटे समूहों में बाँटा और आश्रम का कार्य दिया गया। इसके पश्चात् उन्होंने जीत के बजाय आनंद की अनुभूति के लिए एक आउट डोर गेम में भाग लिया। पुणे केंद्र के प्रतिभागियों द्वारा एक विडियो प्रस्तुति दी गई, जिसमें युवावर्ग स्वयं को बड़े उत्साह के साथ मिशन की विविध गतिविधियों में लीन कर सकते थे। रविवार के सत्संग के पश्चात् मालिक का संदेश पढ़ने को दिया गया और आत्म–निरीक्षण के बाद विडियो क्लिपिंग से आध्यात्मिक भाव खोजने के लिए कहा गया। सूरत के अभ्यासियों द्वारा लालाजी के जीवन पर एक लघु नाटिका का मंचन किया गया। जन समूह के बीच में सहज मार्ग के बारे में किस तरह बात करें और उसका प्रस्तुतिकरण कैसे किया जाए – इसके बारे में कुछ उपयोगी सुझाव दिए गए। कार्यक्रम के बाद युवाओं के बीच आपसी जुड़ाव का महान भाव अनुभव किया गया।

भीलवाड़ा, राजस्थान

२६ फरवरी को ७ अभ्यासियों ने "प्रेम" विषय पर युवाओं के कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने अपने दृष्टिकोण तथा मिशन की पुस्तकों से वार्ता के अंशों पर अपने विचार व्यक्त किए। २५ मार्च को सत्संग के बाद लगभग ९ अभ्यासियों ने युवाओं के बीच सहज मार्ग के प्रति जागरुकता लाने तथा मिशन की गतिविधियों में उनको कैसे सम्मिलित करें, इस संबंध में चर्चा की। सत्संग के पश्चात्, प्रत्येक सप्ताह एक लघु नाटिका का मंचन करने के संबंध में तथा ग्रीष्म कालीन छुट्टियों के दौरान आपसी जुड़ाव को सशक्त बनाने के लिए भ्रमण (पिकनिक) का आयोजन करने के सुझाव प्राप्त हुए।

नए प्रकाशन

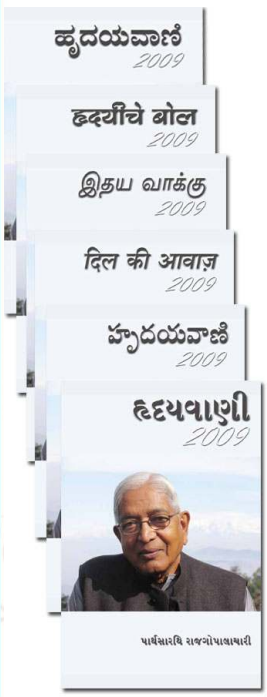

दिल की आवाज़, २००९
दिल की आवाज़ श्रृंखला का नवीनतम् संस्करण, वर्ष २००९ के दौरान मालिक द्वारा भारत में अनौपचारिक विचार–विमर्श और वार्ताओं का संकलन

तमिल अनुवाद पुनः छपाई
"प्यार और मृत्यु"

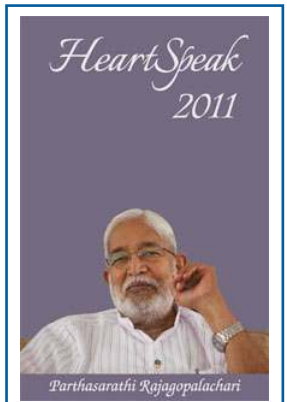

दिल की आवाज़ २०११,
अंग्रेजी

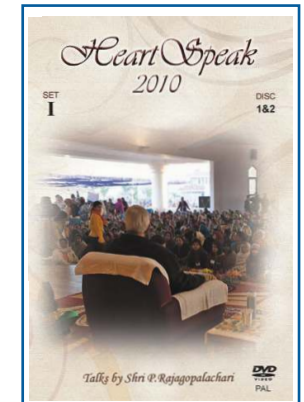

दिल की आवाज़ २०१०
डी.व्ही.डी.

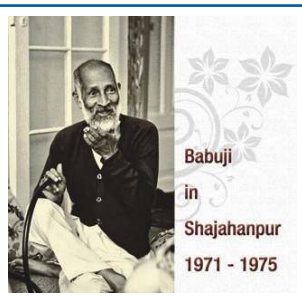

शाहजहांपुर में बाबूजी
१९७१–१९७५
अंग्रेजी एम पी ३

व्हिस्पर्स
(कुछ चुनिंदा संदेश)
एम.पी.३

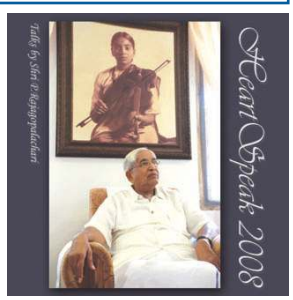

दिल की आवाज़ २००८
एम पी ३

आश्रम विकास

जयपुर, आन्ध्र प्रदेश

रविवार, दिनांक २५ मार्च को मालिक ने चेन्नई से जयपुर (जिला अदिलाबाद) में एक ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया। उन्होंने दस एकड़ में फैले आश्रम की सम्पत्ति के चलचित्र का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया तथा उनके द्वारा उद्घाटन की घोषणा के साथ ही लगभग २०० अभ्यासियों ने ध्यान कक्ष में शान्तिपूर्वक प्रवेश किया और सत्संग में बैठ गए। कक्ष में १५०० अभ्यासियों के बैठने की क्षमता है। कोयला–पट्टा क्षेत्र में गोदावरीखनि, मंचेरियल, श्रीरामपुर, मंदामर्री, बेल्लमपल्ली तथा गोलेटी सहित कई केन्द्रों पर अब मिशन के स्वयं के आश्रम होंगे।

बर्गुर, तमिलनाडु

भाई एस.प्रकाश (क्षेत्रीय प्रभारी, तमिलनाडु, उत्तर) ने बर्गुर में (तमिलनाडु में कृष्णगिरि के समीप) लगभग ५० अभ्यासियों की उपस्थिति में दिनांक ३ मार्च को ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया, इसके साथ ही सत्संग भी रखा गया और अभ्यासियों की संख्या एवं स्तर के सुधार पर चर्चा की गई।

चिखली, महाराष्ट्र

वर्ष २००५ में चिखली में भूमि क्रय की गई तथा वर्षवार ध्यान कक्ष, मालिक का कॉटेज एवं रसोई घर का निर्माण करवाया गया, जो कि मालिक द्वारा उद्घाटन हेतु पदार्पण के लिए प्रतीक्षित था। मालिक के भ्रमण पर प्रतिबंध होने के कारण बारह अभ्यासियों के एक समूह ने आश्रम के चलचित्र सहित मालिक से भेंट की। दिनांक २७ फरवरी को मालिक ने आश्रम के उद्घाटन की घोषणा की। दिनांक २९ फरवरी को सांय सभी आश्चर्यचकित रह गए, जब मालिक ने चलचित्र संवाद द्वारा चिखली आश्रम से सम्पर्क स्थापित किया। उन्होंने अभ्यासियों से उनकी स्थानीय भाषा में बात की और भाई निवृत्ती को सत्संग शुरू करने के लिये कहा। चिखली और समीपस्थ केन्द्रों यथा बुल्ढाना, खामगाँव, किन्होला एवं देउलगाँव घुबे से लगभग १०० अभ्यासी थे।

दमन

अक्टूबर २००८ तक दमन के अभ्यासी रविवारीय सत्संग हेतु वापी केन्द्र जाया करते थे। नवम्बर २००८ में मालिक ने भाई शैलेन्द्र को प्रभारी नियुक्त किया तथा भाई एम.एस.पाण्डे के निवास स्थान पर लगभग २० अभ्यासियों के लिए सत्संग आयोजित किए गए। अभ्यासियों की संख्या ३५ हो जाने पर भाई पाण्डे ने प्रथम मंज़िल पर एक ध्यान कक्ष के निर्माण का प्रस्ताव रखा। मार्च २०१२ में १६०० वर्ग फ़ीट के एक कक्ष का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ। अभ्यासियों ने पंखे, कुर्सियाँ, मेजें तथा पुस्तकें रखने की एक अलमारी दानस्वरूप भेंट की। एक अप्रैल को नवनिर्मित ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया गया, जिसमें समीपस्थ केन्द्रों के अभ्यासी, सूरत के केन्द्र–प्रभारी एवं गुजरात के क्षेत्रीय–प्रभारी एकत्रित हुए। नब्बे अभ्यासी तथा इक्कीस बच्चे इस समारोह में उपस्थित हुए। भाई अनिल एवं क्षेत्रीय–प्रभारी भाई राजूभाई और भाई सुरेन्द्र की वार्ताएँ हुईं। समीपस्थ केन्द्रों के अभ्यासियों द्वारा उनके केन्द्रों के उत्थान हेतु विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में अभ्यासियों एवं उनके बच्चों द्वारा नैतिक मूल्यों पर प्रहसन एवं भजन भी सम्मिलित किए गए।

विल्लुपुरम्, तमिलनाडु

विल्लुपुरम् के अभ्यासियों के एक समूह ने मालिक को विल्लुपुरम् आश्रम के भूमि सम्बन्धी दस्तावेज़ सौंपने हेतु मणपाक्कम आश्रम को प्रस्थान किया। मूल योजना नौ सदस्यीय दल तक सीमित थी। किन्तु, मालिक से मिलने की प्रत्याशा में अन्य इच्छुक अभ्यासी जो प्रतीक्षारत थे तथा जो प्रेमपूर्ण हृदयों से पूरित थे, उन्हें भी मालिक से मिलने की अनुमति प्रदान की गई। उन्होंने विल्लुपुरम् की यात्रा करने का वचन दिया तथा वहाँ एक रात्रि–विश्राम करने की सम्भावना के बारे में पूछा। उन्होंने बच्चों से भी मेल–मिलाप किया। उन्होंने आश्रम निर्माण शुरु करने के लिए कहा। मालिक से विचार–विमर्श के पश्चात् अभ्यासी गद्गद् हो गए और स्वयं को धन्य महसूस करने लगे।

क्षेत्रीय आश्रम, बेंगलूरू

क्षेत्रीय आश्रम बेंगलूरू में एक नया ध्यान कक्ष बनाया गया है। मालिक द्वारा दिनांक १९ फरवरी, २०१२ को यह नया कक्ष, इस युग के महान मालिक परम् पूज्य बाबूजी महाराज को समर्पित किया गया। ८० /१२० फीट के इस ध्यान कक्ष में २००० अभ्यासियों के बैठने की क्षमता है। यह एक खुली शैली का कक्ष है जिसके चारों ओर हरियाली है तथा यह स्थानीय मौसम के लिये उपयुक्त है।

अवसर को चिन्हित करने हेतु दिनांक २६ फरवरी २०१२ को एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम रखा गया। प्रात: ९ बजे और सायं ४ बजे सत्संग रखे गये। इस कार्यक्रम में बेंगलूरू एवं नज़दीकी केन्द्रों से १३५३ अभ्यासी तथा १२५ बच्चे उपस्थित हुए। भाई ए.पी.दुरई, भाई प्रसन्ना, भाई नागराज एवं भाई वेंकटाद्रि द्वारा इस दिन प्रस्तुत 'गुरू और लक्ष्य' विषय पर वार्ताओं ने अभ्यासियों को आत्मदर्शन के लिए प्रेरित किया। हाल ही में नियुक्त ए.एम.सी. दल के लिए भी यह अनुभव गुणकारी एवं प्रकटकारी था।

पूर्ण दिवस कार्यक्रम

भीलवाड़ा, राजस्थान (४ मार्च, २०१२)

पुराने एवं नये अभ्यासियों ने मिलकर मिशन से जुड़ने के कारणों, यथा – मानसिक शान्ति, जीवन के दौरान समक्ष आई समस्याओं का समाधान तथा सत्य की खोज एवं ईश्वर की खोज पर चर्चा की गई। तत्पश्चात् उन्होंने अभ्यासियों के आपसी विचार – विमर्श एवं साधना से जुड़ी विभिन्न समस्याओं पर भी चर्चा की।

उनमें से कईयों ने यह व्यक्त किया कि किस तरह उन्होंने समस्याओं पर विजय प्राप्त करने में गुरु की उपस्थिति एवं सहायता महसूस की। सार रूप में, बिना शर्त प्रेम तथा गुरु की सहायता, अभ्यासियों को आध्यात्मिक मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित कर रहे थे। आशा थी कि यह कार्यक्रम मात्र उनकी समस्याओं के निराकरण ही नहीं अपितु मालिक के प्रति उनके विश्वास को भी सुदृढ़ करेगा, इस प्रकार उन्हें उनके अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता करेगा।

विरुधुनगर आश्रम, तमिलनाडु

दिनांक १८ मार्च को विरुधुनगर तथा आसपास के उपकेन्द्रों के ५२ अभ्यासियों ने एक साथ समूह–चर्चा में भाग लिया, जिनके विषय थे–'इच्छा–शक्ति की ताकत' और 'अब जागो'। चर्चा में 'गुरु और लक्ष्य' पुस्तक से मालिक के कथनों के उद्धरणों की व्याख्या एवं उसका वाचन था। उन्होंने सफ़ाई एवं बागवानी जैसे स्वयंसेवी कार्यों में भी हाथ बँटाया। अभ्यासियों ने पूर्ण–दिवस कार्यक्रम को प्रिय मालिक के स्मरण में रहने का उत्तम अवसर महसूस किया।

तिरूर आश्रम, केरल (२५ मार्च, २०१२)

तिरूर आश्रम को प्राकृतिक सौन्दर्य का वरदान है। यह आश्रम नदी और तीन तरफ़ से विस्तृत अरब सागर से घिरा है। यह तिरूर रेल्वे स्टेशन से १४ कि.मी. दूर स्थित है। इस आश्रम का उद्घाटन दिनांक ४ अप्रेल, २००९ को किया गया था और तब से ही सभी रविवार पूर्ण–दिवस के रूप में मनाए जाते हैं।

२५ मार्च को आश्रम में विशाल पूर्ण–दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में पोन्नानी, मन्जेरी, पेरिन्थलमन्ना, पट्टाम्बी, और वल्लनचेरी जैसे नज़दीकी केन्द्रों के बच्चों सहित लगभग २०० अभ्यासियों ने भाग लिया। उक्त कार्यक्रम प्रात: ७:३० बजे सत्संग के साथ प्रारम्भ हुआ। तीन 'एम' तथा पारिवारिक जीवन में सहज मार्ग पर भाषण हुए। ये भाषण अति सन्देशात्मक थे तथा कई अभ्यासियों ने इसे अपने परिवारिक जीवन में अपनाने और परिवर्तनों का अनुभव करने का संकल्प लिया। दोपहर में युवाओं की विचार–गोष्ठि आयोजित की गई। उन्होंने विभिन्न आश्रमों पर प्रतिमाह विचार–गोष्ठियों के आयोजन का निर्णय लिया।

बाल केंद्र में सभी बच्चों ने उसी स्थान पर प्रहसन–कार्यक्रम में हिस्सा लिया। बच्चों को मूल्याधारित कहानियाँ सुनाई गई। वे समूहों में विभक्त किए गए तथा उन्हें इन कहानियों पर तुरंत व्यंग्य रचने के लिए कहा गया। बच्चों ने अति उत्साह से इसमें भाग लिया। इस कार्यक्रम का समापन सांय सत्संग के साथ हुआ।

कार्यशाला एवं सेमिनार

मुम्बई के अभ्यासियों के लिये सेमिनार

चेन्नई – २६ फरवरी से ३ मार्च २०१२ तक

२६ फरवरी को मुम्बई के अभ्यासी खुशी से भर गये जब उन्होंने गुरुदेव को ध्यान कक्ष में सत्संग कराते तथा शादियां कराते देखा। भाई कमलेश पटेल ने मालिक की भौतिक उपस्थिति को पाने की अपेक्षा दिल से उनका अनुशरण करने के लिये कहा।

भाई एल्बर्टो तथा बहिन ललिता श्रीनिवासन ने 'भाईचारा' एवम 'दिल की आवाज़' पर वार्ता एवं संवाद सत्र का संचालन किया। भाई राजगोपाल द्वारा साधना पर तथा भाई सोमकुमार द्वारा मिशन में सेवा, सतत स्मरण एवं भाईचारे पर प्रश्नोत्तर सत्र का संचालन किया गया।

२९ फरवरी की सायं को गुरुदेव पचास नये अभ्यासियों से अपनी कुटिया में मिले। उन्होंने १ मार्च को सभी अभ्यासियों के साथ समय व्यतीत किया तथा साधना की गम्भीरता को समझने तथा समय मिलने पर ध्यान करने पर जोर देते हुए अभ्यासी के जीवन में समय प्रबंधन के महत्व को बताया।

अभ्यासियों ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सेमिनार से हमें साधना में और अधिक समर्पित होने तथा अन्ततः वह बनना जो 'वे' चाहते हैं, की प्रेरणा मिली।

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

आर. के. पुरम आश्रम, नई दिल्ली, २३ ते २५ मार्च २०१२

आध्यात्मिक प्रशिक्षण वितरण (एस पी डी) के अध्यक्ष, भाई सन्तोष श्रीनिवासन द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मिशन के पदाधिकारियों के साथ कई कार्यशालायें एवं वार्ताओं के बाद एस पी डी मंडल ने अभ्यासी प्रशिक्षण को एक प्राथमिकता के रूप में निर्धारित किया और अपने प्रशिक्षण सामग्री के प्रथम भाग "अभ्यास की प्रारम्भिक शिक्षा" (Grounding in the Practice) को प्रस्तुत किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य विभिन्न ज़ोन के प्रतिनिधियों को सहायक के रूप में तैयार करना था, जिससे वे अपने केन्द्र के अभ्यासियों को प्रशिक्षित कर सकें।

उत्तर भारत के ज़ोन ९–१२ तथा १८ के ६३ प्रतिनिधियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। भाई कमलेश पटेल, जो इस अवधि में दिल्ली में थे, ने २४ मार्च को उपस्थित प्रतिनिधियों को संबोधित किया। अधिकांश प्रतिनिधियों ने बताया कि कार्यशाला में भाग लेकर उन्हें बहुत लाभ हुआ है।

प्रशिक्षकों के लिए कार्यशाळा

वडुगापट्टी आश्रम, तामिळनाडू

१६ तथा १७ मार्च को तमिलनाडु उत्तर ज़ोन के ६८ प्रशिक्षकों के लिये वडुगापट्टी आश्रम, त्रिची में दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। "सभी के लिये आध्यत्मिकता" विषय पर एक कार्यक्रम भाई एस प्रकाश, विभाग–प्रमुख द्वारा संचालित किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि ज़ोन के प्रत्येक आध्यात्मिक अभिलाषी को वर्ष २०१७ तक कम से कम एक बार सहज मार्ग के बारे में जानकारी अवश्य ही पहुंचनी चाहिये।

इस विषय पर संवाद एवं विचार विमर्श के कई सत्र आयोजित किये गये। प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया तथा उन्हें विषय पर लघु–नाटिका तैयार करने तथा प्रस्तुत करने के लिये कहा गया। कुछ लघु–नाटिकायें हास्यप्रद एवं विचारोत्तेजक सिद्ध हुई। इनके भाव को विचार एवं कार्य योजना के रूप में संक्षेपित किया गया।

दूसरे दिन समूह ने तंजोर आश्रम का भ्रमण किया जहां कुछ प्रशिक्षकों ने वार्तायें प्रस्तुत की। भाई एस प्रकाश ने पुनः सामूहिक कार्य करने की आवश्यकता तथा लक्ष्य पर केन्द्रित रहने की बात को दोहराया।

मिशन साहित्य पर कार्यशाला

कर्नाटक

बंगलौर केन्द्र के प्रकाशन स्वयंसेवकों ने अभ्यासियों को मिशन साहित्य पढ़ने के लिये प्रोत्साहित करने हेतू एक कार्यशाला शिमोगा और हंसुर में आयोजित की।

१२ फरवरी को यह शिमोगा में आयोजित की गयी जहाँ पर शिमोगा, भद्रावती, नियमती एवं मंगलौर केन्द्र के ३२ अभ्यासिओं ने भाग लिया। २५ मार्च को हंसुर एवं परियापटना के लगभग ३० अभ्यासी शास्त्री स्कूल के प्रेक्षाग्रह हंसुर में एकत्रित हुए।

दोनों स्थानों पर अभ्यासियों को मिशन की एक पुस्तक पढ़ने व मालिक द्वारा बतायी गयी एक कहानी चुनने के लिये पूर्व सूचना दे दी गयी थी। यह प्रकाश डाला गया कि हमें साधना के एक अंग के रुप में प्रतिदिन मिशन का साहित्य विचारपूर्वक एवं उद्देश्य के साथ पढ़ना चाहिये।

अभ्यासियों को समूह में बाटाँ गया एवं उनके द्वारा चयनित कहानियों को पढ़ने के लिये कहा गया तथा कहानी में मूल्य पर चर्चा करने, क्या इसका दैनिक जीवन में प्रयोग किया गया या नहीं, क्या चुनोतियाँ हैं एवं मूल्यों को दैनिक जीवन में उतारने के लिये चुनोतियों पर कैसे विजय पायी जाये पर प्रकाश डालने के लिये कहा गया।

इसके बाद मालिक द्वारा बतायी गयी कहानियों की विडियो क्लिपिंगस भी दिखायीं गयीं। सभीं अभ्यासियों ने उत्साहपूर्वक इस कार्यशाला में भाग लिया और लाभ उठाया। वहाँ मिशन का साहित्य बेचने की भी व्यवस्था की गयी थी।

बच्चों के लिये खेल दिवस

बी एम ए, मणपक्कम, चेन्नई

१ अप्रैल २०१२ को बाबूजी मेमोरियल आश्रम में बच्चों के लिये खेल दिवस का आयोजन किया गया। लगभग १६० बच्चों ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया जिन्हें आयु के आधार पर तीन समूहों में विभाजित किया गया। प्रथम ६ से ८ वर्ष, द्वितिय ८ से १० वर्ष, तृतीय १० से १२ वर्ष। विभिन्न खेलों जैसे चम्मच और निंबू दौड़, युगल दौड़, मेंढ़क कूद, भाग्य कोना आदि का आयोजन सुबह १० से १ बजे के बीच खेल मैदान पर किया गया। सभी बच्चों ने बहुत उत्साह से सभी खेलों में भाग लिया और उनका आनन्द उठाया। बच्चों और स्वंसेवकों ने प्रार्थना से कार्यक्रम की शुरुआत की। पुरस्कार वितरण समारोह भी आयोजित किया गया।

स्वयंसेवकों के लिये कार्यशाला

वेल्लोर तमिलनाडु

२५ व २६ फरवरी को वेल्लोर में स्वंसेवकों के लिये एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें वेल्लोर केन्द्र के लगभग ४० अभ्यासियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का केन्द्र बिन्दु स्वंसेवकों को साधना और समूह में कार्य करने के लिये प्रेरित करना तथा व्यवहारिक रुप में हृदय से जुड़ने का महत्व समझाना था। सामूहिक चर्चा के लिये चार विषय दिये गये थे। सभी समूहों को वार्तालाप के लिये दिशा निर्देश दिये गये थे जो सुनने के महत्व पर प्रकाश डालते थे। यह कार्यक्रम दैवी माहौल में हुआ।

सभा

सवाई माधोपुर

३ मार्च को सवाई माधोपुर केन्द्र के सभी अभ्यासी सहज मार्ग अभ्यास और प्रश्नोत्तर सत्र के लिये एकत्रित हुए। इस कार्यक्रम का आयोजन भाई अयोध्या प्रसाद ने किया और इसका संचालन जयपुर केन्द्र के भाई संदीप ने किया। अभ्यासियों को दो समूहों में विभाजित किया गया था। प्रत्येक समूह ने सहज मार्ग अभ्यास की बेहतर समझ और जानकारी के बारे में मुद्दे प्रस्तुत किए। पूरा सत्र बेहद संवादात्मक था और प्रश्नोतरी मालिक द्वारा दी गयी वार्ताओं पर आधारित थी। केन्द्र के सभी अभ्यासियों को गृह गोष्ठियाँ सुनियोजित तरीके से करने के लिये प्रेरित किया गया।

आध्यात्मिकता और चिकित्सीय पेशा

कसारागोड, केरल, ११ मार्च २०१२

११ मार्च को बेला, कसारागोड में "आध्यात्मिकता और चिकित्सीय पेशा" इस विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कसारागोड से कालिकट के चौदह चिकित्सक इस संगोष्ठी मे भाग लेने के लिये आये जो कि चिकित्सिय शिक्षा में आध्यात्मिकता के महत्व को चिकित्सकों में आत्मसात करने के लिये आयोजित की गयी थी। वर्तमान समय में इलाज केवल बीमारी के इलाज तक ही सीमित रह गया है और वह व्यक्ति जो बीमारी से पीड़ित है उसके बारे में नहीं सोचा जाता। चिकित्सक केवल धन कमाने के बारे में सोच रहा है और मरीज़ होने वाले खर्चों से परेशान है। यदि चिकित्सक चाहे तो वह मरीज़ की सोच में आशावादी परिवर्तन ला सकता है और आध्यात्मिकता से उसका परिचय करा सकता है।

निबन्ध लेखन कार्यक्रम – प्रमाणपत्र वितरण

बेल्लारी, कर्नाटक

भारत के समस्त केन्द्रों में उन प्रतिभागियों , जिन्होंने २०११ के वार्षिक निबन्ध लेखन कार्यक्रम में भाग लिया और विभिन्न स्तरों पर पुरुस्कार जीते, को सम्मानित करने के लिए समारोह आयोजित किये गए। उत्तरी कर्नाटक में बेल्लारी, गुलबर्गा, हुबली और बिदर, तमिलनाडू में तुतिकोरिन, तिरुचेन्दुर, कोविलपट्टी, ऊटी और तिरुपुर, गुजरात में भुज, मेहसाना और वड़ोदरा तथा झारखंड में रांची केन्द्रों पर ये समारोह फरवरी, मार्च और अप्रैल २०१२ में आयोजित किये गए। इन समारोह में छात्रों, उनके अभिभावकों और अध्यापकों को आमन्त्रित किया गया और विभिन्न श्रेणियों के पुरुस्कार विजेताओं को प्रमाणपत्र वितरित किये गये। मिशन की गतिविधियों की जानकारी देने के उद्देश्य से वार्ताएं प्रस्तुत की गयी और निबन्ध कार्यक्रम आयोजित करने के उद्देश्य को बताया गया। जो व्यक्ति मिशन के विषय में अधिक जानकारी पाने के इच्छुक थे उन्हें मिशन का साहित्य उपलब्ध कराया गया।

हुबली, कर्नाटक

तिरुपुर, तमिलनाडू

तुतिकोरिन, तमिलनाडू

कोविलपट्टी, तमिलनाडू

बिदर, कर्नाटक

वड़ोदरा, गुजरात

भुज, गुजरात

ऊटी, तमिलनाडू

मेहसाना, गुजरात

गुलबर्गा, कर्नाटक

रांची, झारखंड

विजयवाड़ा आश्रम, आन्ध्र प्रदेश

विजयवाड़ा जो कि भारत के सबसे पुराने केन्द्रों में से एक है, क्षेत्र के अभ्यासियों के लिए पाँच दशकों से भी अधिक काल के लिए आध्यात्मिकता का प्रमुख केंद्र रहा है। यह १९५९ में अस्तित्व में आया जब बाबूजी महाराज ने इस नगर को भेंट दी जिसमें केवल आधा दर्जन अभ्यासी थे। १९६३ में वे केन्द्र में फिर से पधारे, तीन दिन ठहरे और सत्संग कराए। २५ मई १९६७ को उन्होंने प्रशिक्षक भाई डॉ. पार्थासारथी के घर की पहली मंज़िल पर ध्यान केन्द्र का उद्घाटन किया। जब इस क्षेत्र में प्रचंड तूफ़ान आया था तब बाबूजी महाराज भी विजयवाड़ा में थे।

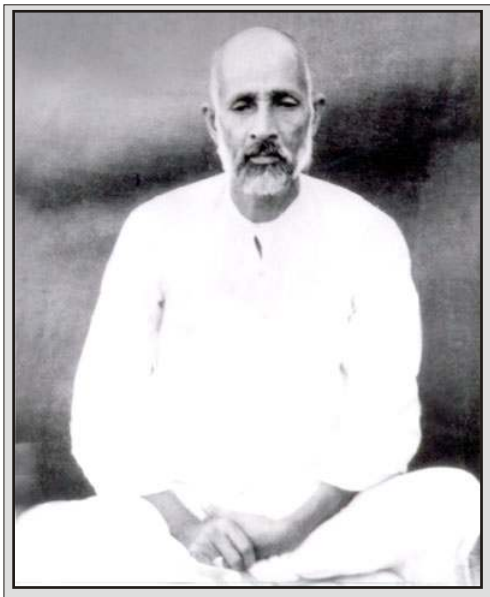

२५ मई १९६७ को ध्यान–केन्द्र के उद्घाटन के दौरान बाबूजी का सन्देश

"हमारे पूर्वजों ने आत्मबोध के अपने मार्गों को जीवन के कार्य–कलापों से दूर, अपने सहजनों एवं दूसरों के साथ सांसारिक संबंधों के सभी बन्धनों को त्यागते हुए, जंगलों में ढूँढ़ा था। सहज मार्ग पद्धति में हम अपने घरों में अपने चारों ओर ऐसा वातावरण पैदा करने की कोशिश करते हैं जिससे वे जंगलों का मक़सद (उद्देश्य) पूरा कर सकें।"

भाई सुंकरा वेंकटप्पय्या ने १६ मई १९७२ को शहर के मध्य भाग में स्थित १६७२.२६ वर्ग मीटर बड़ा भूखंड दान में दिया। आश्रम मुख्य मार्ग पर है और केन्द्रीय बस स्टेशन तथा रेल्वे स्टेशन दोनों से केवल ४ कि.मी. की दूरी पर है। १८ मार्च १९८७ को गुरुदेव द्वारा ध्यान केन्द्र, डॉर्मिटरी और गुरुदेव के कुटीर के लिए ४२० वर्ग मीटर के निर्माण के लिए आधारशिला रखी गई। इसका उद्घाटन २४ जुलै १९९५ में इलाहाबाद के डॉ. चन्द्रिका प्रसाद द्वारा किया गया। गुरुदेव ने आश्रम को २२, २३ और २४ दिसम्बर २००२ को तीन दिनों की भेंट दी। तब प्रदेश के विभिन्न भागों से आए अभ्यासी उपस्थित थे और उन्होंने गुरुदेव की कृपा प्राप्त की।

वर्ष २००५ में ध्यान–कक्ष के लिए सुनिर्मित बरामदों सहित पहली मंज़िल जोड़ दी गई। इसके बाद सहज मार्ग स्पिरिचुएलिटी फाउन्डेशन के लिए ध्यान–केन्द्र के ठीक पिछले भाग में २८४ वर्ग मीटर स्तंभ–क्षेत्र वाला एक भवन खरीदा गया। इस बुनियादी संरचना को पूरा करने के लिए एक रसोईघर और पुस्तकालय जोड़ने की योजना है।

एस.एम.एस.एफ़. भवन के चिकित्सा–केन्द्र में सामान्य चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध हैं और हर रविवार के दिन कई अभ्यासी एवं स्थानीय लोग सेवा के लिए मौजूद चिकित्सकों (डॉक्टरों) की सेवाओं का लाभ उठाते हैं। मरीज़ों को दवाइयाँ निःशुल्क वितरित की जाती हैं।

आश्रम में रविवार और बुधवार के दिन सायंकालीन सत्संग के अलावा हर दिन सुबह सत्संग किया जाता है। लगभग २५० अभ्यासी रविवार के सत्संग में उपस्थित होते हैं। केन्द्र खुली सभाओं, अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रमों और वी.बी.एस.ई. के क्रिया–कलापों का नियमित रूप से आयोजन करता है। हर रविवार को अभिलाषियों के लिए स्वागत–डेस्क और नए अभ्यासियों के लिए स्पष्टीकरण–सत्र आयोजित किए जाते हैं। युवा संवाद–सत्र भी नियमित अंग हैं। केन्द्र आश्रम के परिसर के विस्तार के लिए निर्माण–कार्य की योजना बना रहा है।

केन्द्र द्वारा मिशन के मूल ध्येय (विचारधारा) को बनाए रखते हुए गुरुदेव के सन्देश को पूरे ज़िले में फैलाने का काम ज़ारी है।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2011 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.